



...मन्त्राय नमः
...दीप्तिं देवताय नमः
...विष्णवे नमः
...शिवाय नमः

ममदिः गत्यर श्री रवमिश्रं शुक्रय दयथमगनी विहा मग ४ कलियुग वायु युगीतवः
 क्लीग ह्यानुयुग जङ्ग तीर्थ नृधाव न गलुका डरु न हं (घ) निले ककुा वैभियं त ४
 पूर्व ला गच द्यावृ च्च द्यावभियं त ४ ॥ तीर्थ वृजाम नीलिगं मथिलं त न वध्व ना ॥ तिर्गं च
 ग नया लायुवृ सा गत ४ ॥ च न्य च न्दं श्री नोम लीन म क यति सि ती म कृ जामि दं धा क
 तीर्थ समन्ति ती य ४ प १० मान वा निर्य स व य र रु लं स रं ॥ च रु वृ क ध्व रु वं दं म थ वा वा द
 ११ न व क वी रु लं त स्या नं क ना यिक दा च ॥ सा ग ना ला ये र्म नी र्थ य थि वी न ज र्म क या ॥ ग
 र्म ना च य नृ क स्या र्म क या ॥ न त थ जा य र्म कं ती म र्म ना कि यं द ल ॥ मा र्म र्म क उ र्म

[illegible]

ॐ नमः ॥ लेनवाय ॥ केला हा ही खना ही नं दवदव जगदुत्र ॥ ॐ कर्न पजि
पार्वती पत्रम ॥ ॐ धी पार्व नू वाच ॥ रगवन सर्व धर्म ॥ सर्व ॥ ॐ प्रागु
आपद दान लं मर्त्य ॥ ॐ सर्व सिद्धि यदं नृ ॥ सर्व ॥ ॐ वरु ना ना हि नार्थ वा
॥ वि ॥ ॐ घन मु ना ॥ ॐ वे ॥ ॐ नि पू स्थि य सा धनी ॥ ॐ अं न्या ॥ ॐ क न न्या ॥ ॐ वी ज न
॥ ॐ नि नी ॥ ॐ व कु म ह सि दे व ॥ ॐ म म ह र्ष वि क र्द न ॥ ॐ र ग व नू वा च ॥ ॐ वृ द दि
॥ ॐ आप द दान ह नू के ॥ सर्व दू ॥ ॐ ख य ॥ ॐ म न सर्व ॥ ॐ वृ नि व ह ॥ ॐ अप

ॐ दाना ॥ ॐ अ वि ॥ ॐ घ न ॥ ॐ ना ॥ ॐ नं ॥ ॐ मि म र्थि ॥ ॐ म नू ना ज मि म र्थि
॥ ॐ ह या ना ॥ ॐ ना ॥ ॐ नं ॥ ॐ स र व क र्द न ॥ ॐ ह हा द ॥ ॐ मि म र्थि ॥ ॐ सर्व सा ज मि म र्थि
॥ ॐ व का मा र्थ दं ॥ ॐ म र्थि ॥ ॐ ना ॥ ॐ र ग व दं नृ ॥ ॐ आप द दान लं मर्त्य ॥ ॐ व ॥ ॐ मि म र्थि
॥ ॐ घ न ॥ ॐ य ॥ ॐ व पूर्व मू चार्य द वी य ॥ ॐ व मू द न ॥ ॐ वृ का य नि वे य ॥ ॐ दा प द द न
॥ ॐ रु द र्थ न ॥ ॐ प ॥ ॐ वृ का य पु न ॥ ॐ दि प न द वी य ॥ ॐ व मू द न ॥ ॐ म म र्थि ॥ ॐ दान मि
॥ ॐ म म र्थि ॥ ॐ दान मि म र्थि ॥ ॐ दि वे ला क स्या पि दू र्त्त ॥ ॐ प्र का स्य मि म र्थि ॥ ॐ सर्व ॥ ॐ दि
॥ ॐ नि नी ॥ ॐ म न ॥ ॐ द व म र्थि ॥ ॐ स र व पु न पि ॥ ॐ म न का ॥ ॐ वि द व नि र या ॥ ॐ वि द

देवप्रजाऽप० द्वाप० ० थं द्वापि पूजयु द्वापि पूस्कं । नाग्निं वो न रर्यं क्रो
न जल रर्यं न था । न च मा नी रर्यं न स्य स च य स ख वा न ह व ग । अथ यात्रा ग्य म
यो वा दिस म्य द ४ । र व कि ण ग रं ग स्य पूस्क क स्या पि पू जे ना न ॥ धी पा च न्यू वा
ध रे न वा ना म श्रा प दू द्वा न का म न ४ । ख या च क थि ना दे व रे ने व ४ क ल्प उ ह म
म सह आ लि अ यूर्त न्य वृ दानि च । सा न मू ह न्य गे र्वा वे ना मा ह ण ग रं व द
वा न वा च ॥ य पु र्ण की र्थ द न न सर्व म न्त्र नि च र्ह र्ण । सर्वा न्का मा न वा धा रि
मि भव च । ४ । धू द वि प्र व क्रो मि रे न व स्य म हा त्म न ४ । श्रा प दू द्वा न क ४

न मूल मं सर्व पाप ह रं पू र्णं सर्वा प द्वि नि वा नृ कं । सर्व का मा
सा ध का नां सु ख वा व र्ण । दे हा ङ्ग न्या स क ॥ अथ पूर्व क र्या समा रि
रे न वं मू र्द्धि वि न्य स्य ल ला टि ली म द णी नी । अ द्वा र्दे ना ध र्यं न्य स्य
नी नी क्क द णी नी । के व र्प क र्ण आ र्म ध्ये के व पालं द दि न्य स न् । के व
ने के ॥ ४ । क र्यां सर्वा घ ना ण नी । वि न्य मू र्धा वि न्य स्य र्ज घ आ न क
नी । पा द या दे व द र्वा णं सर्वा ॥ अ व दू कं न्य स न् । ग रं न्या स वि धि र्क र्वा
न मूल मं । ना मा ष ण न क स्या पि के न्दा इ ने सू व द द र्वा इ ह

नामममिष्ठयपनि कीर्तिनः। दवना कथिना वहसहि च दूक रेन
नामार्थसिद्धि च विनिथागः प्रकीर्तिनः। दवना कथिना वहसहि च
ववः। सर्वकामार्थसिद्धि च विनिथागः प्रकीर्तिनः॥ ॥ कनकलिन क
लीदधुपानी नू लनि मित्रनीलः शालय रूपवीनिः। कुरु समय
विष्णु दहृकु य निवहृ कनाथ सिद्धिदः साधकानां॥ वन्दे वालं सु
दलाहा सिवकुं। दिवा कल्याण नमनि मय किं किनी नू पूना धीः। दी पू
न सूर्य सूर्य विनयः। हस्त का ह्यो वरू कमनिर्गल दधु दधनी॥

नने रं विनय लं नका अनागः प्रजं भाना स्य वन दं कपाल मलय
किनेः। नीलग्रीवमू दा न हृष ल हनी नी नी स्व (लु) कल वंधू का
ह्य हनं दवं सदा रावि यत्॥ ॥ ध्यायन्ती लादि का नि सगि सकल
मालं महर्ग दिग्य मुं पिंग कर्णं उम नू मथ लिव ज धूला ह्या नि नागं द्यो
न कन गिना सिनू हे विनयं रा म दं दं सप्यो कल्प विनयं मलि मय विल सत्किं किनी
॥ सात्त्विक ध्यान माख्या नमप मृ ग्य विना धनी आयु ना नाग्य जनन मय वग
ना ज स ध्यान माख्या न धर्म कामार्थ सिद्धि दी नामर्ग सूर्य मर्ग दत्ता तन ग

[illegible][illegible]

वहाह्वदही। सर्वसिद्धिः यथावेद्यः परविष्णुः यथापवान् ॥ ॥ अक्षरं न ज्ञातं
नेनस्यमहात्मनः। मया न कथितं न दत्तं न हस्तं सर्वकामिकं। यः दं प० तिस्रः प०
नागमूलमं। न तस्य दूनिर्गं किं चिन्नावनागर्यं तथा। न क्षयं न शयं किं चिन्नावना
नवाहमं। यानका नो रयं त्रैवप०। स्मायमनन्यधीः। माजी रयवाज रयं न थः
न रयं। ज्ञेयानिकमहाधामन थदः। स्वयं दहं नो वन्धनत्रय थधामन प०। स्माय
नः। सर्वेषु धामनै रयानि रयं रयं न वकीर्तनात्। एकादहा सहस्रं नु पून ध्व
॥ ॥ यः प० द विस्वत्स नमनं चिन्ता। से सिद्धिं पाप्मनादि स्माय

॥ ॥ मासाह मि कामपु संज ह्याल रयं न हीं। नाजा। न गृविना। ना
दि। ना। गोवान रयं वेवना। न रयं वना। यवान्। जयन्मा सयं रयं न विना। नाजा
यगा धनार्थी वसुगार्थी च दानार्थी यमु मानवेषा प०। द्वात्रयं यद्वावानमकं
निधो धनं पूर्वां सुधा दानान् पाप्मना न्नाग्र धं सयः। नागी। नागमत्यमृथं तवधो
न वन्धनान्। ली। ना। रय। त्यमृथं तद वि सत्यं न धं सयः। यान् यान्। नमी हनं काम
ना। प्रा। नि। नि। धि। नी। अयका। धमि। दी। गु। र्धनं दयं पश्य कस्य चिन्ता। सत्कली। ना। य
यमज वज्र मुवर्जिना। दद्यात्स्माय मिदं पूर्वं सर्वकाम हृत्पदं। धामनं वज्र

मयथाश्वाप(०)नन४॥ छद्मरुटिकसंकाशं सहस्रादित्यवर्चनी। अरु
नं चतुर्धा द्विवाक्यं॥ अजं भवत्वं दवमस्ति वल्लुगिना नृही। दिगम्ब-
रुकाख्यं महाबली। खद्वां मसिधां गुह्यं वेतनगथमपूज॥ उमन्त्रं च कथ-
युज्जगन्तथा। नीलजीमूतसंकाशं नीलाङ्गुलं यथार्थं। दंष्ट्राकनालवदनं नू-
तकली। आत्मवर्णसमाधनसात्रभयसमन्विता। आत्मा जपस्संक्षेप॥ सर्वानि
वायुयागान् नतु श्रुत्वा गगादविना माहृणागमूहमी। तेन वायुप्रदक्ष्णा
यानि॥ ॥ इति विस्वसाभादाय श्रमद्वानेकलेशेन वस्तुतम

एव वायु॥ अतस्तु मनुजैः संकननिवमयैः हृत्वा-
गिनां यन्त्रं स्वर्गः समस्तैस्वविनसृग्। लिङ्गं तूयाविरहकिः ना-
गासुः विविधिनयनैः यदसकिपुनकाकः गत्यस्तु विगर्हः ह-
नः। एवववपूनाथा॥ यावन्ना गत्यस्तु लिः समस्तैस्वमूखवा श्रुति-
यादवायनवाग्नाः यकिनिगयनमः चास्त्रयप्रहदनिबोधाद

वहिन हगवतिः क्षीनधा नावनालं : तल्लसं नं वक्र हः सुकन मरि
तन नमामि॥ जाव नु न गहिनाः न वि ह वि सु द नः म ह चै न व न
न्य या च क वि द ह न रु द नः द्वा द स क न सं स्मः ग कि लु जा न के हि
व र य ताः स व स क क व लिः गं का ली नी मि नी लं : व न व द म यि स व
मि ति॥ ३॥ या भ न का ना मिः क ह हा कि नः वि श्व त्र याः सा मा क व ति

हृष्टा। च वि न स या क व नि त ल वा॥ ह कि लि नि य य का ल
॥ क्ष ना मि क स क लः ल व वि ह ग हि नाः अ न न द न न य द य न
क ना को लि न वि श्व ह न न द वाः स का द भ क न ग ताः त्व र कि द व
स ता क न ग ताः क ल क म र भः ति ला क ल म य ह व न कः त न य सि
म का क न क ग ति च क न ह ह न व वं डि ता या॥ ३॥ का ली क ली क

ला ला मि ता ला वा व क च क नि ह त व ह द हि नः य ॥ १ ॥ स ॥ स ॥ क ॥
नू नू वाः वि द्वा न सि धि व ल व द्धि क न य सि द्धा ॥ ४ ॥ अ ह व क र न य
पु च अः च क क म ग दि त म क मा ह य वे ला स न ग या मि नि न
द दा ताः स्त्रा हा व ल व के व क य नाः य न मा मि का ला ॥ ५ ॥ ॐ ति मु ति
॥ ३३ ॥
॥ ३४ ॥

॥ ३५ ॥ द वा ह द वा य ॥ ६ ॥ त ना द उ वा च ॥ अ हि स अ यः य दृ क ॥ ७ ॥
॥ ८ ॥ वा ॥ वा नां कू रू ॥ ९ ॥ सु य व क म हा ह व ॥ १० ॥ क र त य म र्वा द
॥ ११ ॥ म हा व लाः म हा न थ म्भ क र तः क थ य वि नि वा मि ता ॥ १२ ॥
॥ १३ ॥ म क थ र त म्भः क क म ला क थ ह तोः य ग म्भ म र्म द लाः क थ
॥ १४ ॥ ३ ॥ स ज य वा य ॥ १५ ॥ ह र य वा य वा यः स व य ते क म व

क मना नाङ्गः यथायुद्धं यवतिर्त्त ॥ ४ ॥ अरु न सा य कि म्भ
य गाल्क च ४ न कूत ह ह द व म्भः ध म्भ यू न य वि म्भिन ॥ ५ ॥
ना वि ना न म्भः दू य द म्भ म हान थ ४ः ध म्भ क टु मि सं शी यः म
म वि ये वा न् ॥ ग ॥ सो ह वा डो य द य म्भः अ हि म दू म ह वा व ह
म हान नाङ्गः धा उ म न म हान थ ॥ १ ॥ या द वा ना म हान

ना क साः को न वि ना म हान या द वाः सर्व गाना क
म म दानिः की य म्भ क म्भः वृ व म्भ ना य ल वृ म्भ म्भु नि म्भ वा म्भ व
म द ह म्भ ये व च ॥ १ ॥ म कू नि सो व ल हि म्भः कू य व म्भ ज य ड
म ४ सा म द ह म्भः म्भ वि ड म्भ का यि व म्भ १ ० ॥ वे म्भ ल ना वि व
मि गे म्भ म्भ ये व चः दू द न म्भ इ म्भ ये म्भः इ अ य हि ह म्भ म्भ नि

ता इमं लब्धेव इत्यथा इति निरुक्तं ॥ इति भासना वि सिद्धयः ॥
॥ १२ ॥ अतः कति न गता या वाः शन न यति किं किं ता ॥ इत्यादि ॥
या धका सासना गता ॥ १३ ॥ अदि यच्च स ता यच्च यच्च न व्यक्तं व
सात यच्च विद्वयः चतुर्थं एतत्तत् ॥ १४ ॥ उद्गा गं यच्च स यच्च हि स व
॥ सक्तं ता यच्च सक्तः कुरु यच्च सक्तं यत्न ॥ १५ ॥ नवमे गतं यच्च

॥ १६ ॥ यत्नः सियच्च कदस यार्कः द्वादशं सक्तं यच्च सक्तं ॥
हि सक्तः सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं
सा गता सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं
॥ १७ ॥ धमा नासक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं
सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं
॥ १८ ॥ उत वि सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं

१२० श्रीमसेव अष्टो तरे शारतलोच

आपकुछारे औरव शाव

भारतराजीव-३

ASHA ARCHIVES

3274

भारतराजीव-३

1081 118 — ALL THE

53

आप दुखारे भैरव साव

भारतस्य जीव-विज्ञान-संशोधन-संस्थानम्

ASHA ARCHIVES

3274

[illegible]

[illegible][illegible]

नामो भगवते वासुदेवाय सा निमालकं दवत्तं थहन नहन सचतुर्दिगवलि
सम्पन्नं भगवत्पुत्रं धनं चक्रयाचका ॥ दवत्तं युन पवित्रयाह ॥ वसुदेवकान्तं दक्षिणयनि
कोदणी यवतिनं कुरु आदिशवानः जागदावशनी ॥ १० ॥

७३ वेष्टमयं कुरु ॥ हनीया मूननं कुरु साधयं कुरु याग ॥ वधवासनं धदिनं कुरु श्री ३ वृगमाय
धनं स्या पुनः कुरु कजायाग शवसा ॥ ५५ ॥ धनं द्वाष्ट कजाशव यमदृष्टा स जागयाह
गता कदावः यागमहिं वामगमक वामस्याधी सिप्र सिप्र शानती सिक्कः कजा
६० म्यानं ३ मानं २ विप्र १ या ४ चक्रकुरु १ अन्नगोक सुश्वः थं वान स चाकन न स्या स
होना ॥ १० ॥

नष्ट वेष्टमयं मलमाग शवसशी ३ वृगमायाव सा किं नष्टमय जागथव दिनमरुस्य दानं ॥
सानरुस्य पुनसल क्तिथव के नयाव ॥ ५६ ॥ कुरु कुरु नकाद भि २२ उद्वा दणी ॥ रुम २२ मयि या
कुरु निः पुनः कुरु गजशवशनी ॥ सक्तिमग वाहान यागदाव कुरु थकुरु महाव के वा के सु
थे वादाव सक्ति नयादणी स्वाति ॥ अं भवान् रुमलो मकुरु आक नाकदावः सक्ति
सक्ति युक्ती मी १७ अन्नगारन कुरु गुरुवान् धकुरु महावः सक्ति यादा १७ के सु ३० सिद्धि १७ सा
न नि नो ग्यागदाव सक्ति द्वितीयाः थयि नाय स नवा के द्वाव सात्रम सक्ति वधन सक्ति महाव
थन कि द्वातीया रुयाव आदिशवान् कुरु लहन यागदावशनी ॥ १० ॥

[illegible]

वेन भुक्ता ॥ पशुमी ॥ आदानं कुरु ॥ वृहस्पतिवाना ॥ धदिन कुरु ॥ श्रीवृंगरलाठनं ॥ पिसानं
नकाव ॥ आयलयातधूनकाव ॥ श्रीपिपेलनाजकूनस्य ॥ स्यवृहाथानववा ॥ कानि स्य ॥ वन
खंडाव ॥ श्रीदिवत्तयनेभास्य ॥ श्रीदिव विद्याचक मेच्छनस्य ॥ श्रीदिवत्तनथनक काव
यहयाव ॥ नववाहापमथागा ॥ मुनकृतिमविद्याचका ॥ नववाहापयादवृत्तिम
विद्याचका ॥ दशकीमेयाचकाव ॥ चनकृष्ट ॥ पुनियुदा ॥ स्वातिन कुरु ॥ ननेष्ववान ॥ धा
लाठनं ॥ कवनरुपा ॥ धनलिगववाहापमविद्याचका ॥ पूनसनथ ॥ आयाहवत्त ॥ न
थहात्त ॥ पुनपृक्तजहाव ॥ नोयाननंष्टव ॥ सहनयातं हाव ॥ धनलिगन कुरु ॥ आ कुरु ॥ कन
न्यावे ॥ पिसानविद्याचक ॥ आयलयातधूनकं ॥ श्रीदिवत्त ॥ वंद्यस्य ॥ पाच्छोस्य ॥ लि

॥ अथ सविष्णुचक्रात् ॥ मन्त्रानामध्वल्यन्तयाधर्माश्च वक्ष्यामि ॥ १॥
 ॥ अथ सोऽवधेष्टा भक्तिवत् ॥ न नो यविष्णुः कदापि दृष्टव्यं न भवति
 ॥ अथ न दध्मविः निरुक्तविजयदध्मविः नित्यं अवहिताः सान्निध्य
 ॥ ३॥ ॥ अथ दध्मविः निरुक्तविजयदध्मविः नित्यं अवहिताः सान्निध्य
 ॥ अथ दध्मविः निरुक्तविजयदध्मविः नित्यं अवहिताः सान्निध्य
 ॥ अथ दध्मविः निरुक्तविजयदध्मविः नित्यं अवहिताः सान्निध्य

वासुदेव महायनः नल्लग्नो ववंधना ॥ ३३ ॥ निःशब्द उच्यते
 ॥ ३४ ॥ अथ नन्दयोः वृत्तान्तः ॥ नन्दो ह तस्य सूर्यसूतनहिनाः चन्दो
 ॥ ३५ ॥ मय्यवचचन्दो ह तस्य सूर्यसूतनहिनाः चन्दो
 ॥ ३६ ॥ मय्यवचचन्दो ह तस्य सूर्यसूतनहिनाः चन्दो
 ॥ ३७ ॥ मय्यवचचन्दो ह तस्य सूर्यसूतनहिनाः चन्दो
 ॥ ३८ ॥ मय्यवचचन्दो ह तस्य सूर्यसूतनहिनाः चन्दो
 ॥ ३९ ॥ मय्यवचचन्दो ह तस्य सूर्यसूतनहिनाः चन्दो
 ॥ ४० ॥ मय्यवचचन्दो ह तस्य सूर्यसूतनहिनाः चन्दो

अथ चोच को न वा ॥ या लु वाना म हा लु श्रीः लु लु लु
३॥ दिना निद भ हि अ स्यः दा न स्या हा नि य श्व व । दिन द्वा य नु व
पा द दिन क था ॥ ३७ ॥ दिव स्या द ग दा य द्वाः य ह य न स दा नु ली
ह न भ का मिः वि ग ह ह न य व ह ॥ ३८ ॥ त सि न व ने ली ना तोः दा नि न
त ॥ ३९ ॥ द्वा द्वा स्या ह न स्याः मि स्या नि य म हा व त् ॥ ४० ॥ दा य द य म् ॥

अथ चोच को न वा ॥ या लु वाना म हा लु श्रीः लु लु लु
३॥ दिना निद भ हि अ स्यः दा न स्या हा नि य श्व व । दिन द्वा य नु व
पा द दिन क था ॥ ३७ ॥ दिव स्या द ग दा य द्वाः य ह य न स दा नु ली
ह न भ का मिः वि ग ह ह न य व ह ॥ ३८ ॥ त सि न व ने ली ना तोः दा नि न
त ॥ ३९ ॥ द्वा द्वा स्या ह न स्याः मि स्या नि य म हा व त् ॥ ४० ॥ दा य द य म् ॥
अथ चोच को न वा ॥ या लु वाना म हा लु श्रीः लु लु लु
३॥ दिना निद भ हि अ स्यः दा न स्या हा नि य श्व व । दिन द्वा य नु व
पा द दिन क था ॥ ३७ ॥ दिव स्या द ग दा य द्वाः य ह य न स दा नु ली
ह न भ का मिः वि ग ह ह न य व ह ॥ ३८ ॥ त सि न व ने ली ना तोः दा नि न
त ॥ ३९ ॥ द्वा द्वा स्या ह न स्याः मि स्या नि य म हा व त् ॥ ४० ॥ दा य द य म् ॥
अथ चोच को न वा ॥ या लु वाना म हा लु श्रीः लु लु लु
३॥ दिना निद भ हि अ स्यः दा न स्या हा नि य श्व व । दिन द्वा य नु व
पा द दिन क था ॥ ३७ ॥ दिव स्या द ग दा य द्वाः य ह य न स दा नु ली
ह न भ का मिः वि ग ह ह न य व ह ॥ ३८ ॥ त सि न व ने ली ना तोः दा नि न
त ॥ ३९ ॥ द्वा द्वा स्या ह न स्याः मि स्या नि य म हा व त् ॥ ४० ॥ दा य द य म् ॥

५॥ यः यकीरुतय धा नाज नः प्रात नावु य नं गि नं ॥ ५॥
वाः गजवाजि व दा त य ॥ य य न न वा रुताः यु द्वा यु नित कु म ॥
रा या न त व तिः न स व नि व रु द्वा नी ॥ न स म नि सु द्वा ह यो न स म नि न
॥ ५॥ अ ध र्म न हि ना ज न्दः य ता सु वि नि या ति ता ॥ अ न द स न ह व यु द्वा इ ति
ह स ता ॥ ५॥ दे वि क ला क र क रः यु य क ला ज ना द नः इ डा ध न व ॥

मि स न व द्वा द न ॥ ५॥ न क ला ज रु स र्का न ॥ स ह द व रु ता स न ॥ हा ना न
रु ताः य ज मा ना यु धि वि न ॥ ५॥ अ म ग्री व रु अ र्ध व रु ताः द्र य मा न रु ता ज
य रु द्वा मि व द्वा म रु द्वा मि व द्वा मि ॥ ५॥ स र्व द ति स य रु रः क र क र न
म व य रु र्ज रु रः दि कि ता य रु धि वि न ॥ ५॥ अ रु ता रु अ म रु ता यु द्वा वि रु
रु ताः रु रु य न स या रु ता रः म रु ता न रु म रु ता ॥ ५॥ रु रु ता रु न रु सा वि दि















